

विचार बिन्दु

जो वस्तु आनंद प्रदान नहीं कर सकती, वह सुन्दर हो ही नहीं सकती। -प्रेमचंद

ज्ञान, समझ व युक्ति के संयोजन से सुखी और हितकारी जीवन संभव

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुतः आंकड़ों से आंकड़ों, या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देह स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं:- शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन पर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं:- ध्योरी, ऑब्ज़र्वेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथेमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है। प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है।

किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है। विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा, मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानि, ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ ही पिछले पाँच दशकों के दौरान साईंस ऑफ़ विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है। विजडम व्यक्तिवत्त की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक यूरोप बायोलाजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकल ट्रायल्स को समाहित किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57 अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेड्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतु विजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समग्रता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुये किये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकल विजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकल विजडम / प्रोनेसिस, सही कारणां के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियाँ और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रस्तावनी के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवैशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकल रिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यात्मिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नल ऑफ़ साइकियाट्रिक रिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यात्मिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्मिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यात्मिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्मिकता आध्यात्मिकता और आत्म-समीक्षा के अन्तर्गत प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की तृप्तिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है।

ध्यान दीजिये, आध्यात्मिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहाँ एक ओर समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धान्त आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरूप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजियन कहती है। असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझ के वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकल ट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनल रगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहार या प्रोसोशल बिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशल एडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतार्य (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुतः प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की ओर समाज की जिंदगी में बेहदरी लाना है। यहाँ एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड्मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-निर्भर, आत्म-समर्पक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में दितायु कहा जाता है। सुखायु और दितायुप्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शांतिर दिमाग, तिकड्मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड्म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोनी जानकारी सुखायु और दितायु नहीं प्रदान कर सकती।

अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ से भी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लोक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिक प्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यापार सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समग्रता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कर्तव्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सु. 11.25): बुद्धि:पर्ययति या भावा-बहुकारणयोगजान्। युक्तिरिक्तासा ज्ञेयात्रिवर्गःसाध्यतेयया। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुतः जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समझ अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है। एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिक महत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढत होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर हास या घटत होती है। यह सिद्धान्त अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि धर्म में गुस्सेल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्वदा भड़कने। इसके विपरीत यदि गुस्सेल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है।

दैनिक जीवन में समस्या-समाधान हेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी है। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्य चरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीन बहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



डॉ. रामावतार शर्मा

बहुत कम लोग इस जानकारी के प्रति सजग हैं कि हमारे स्वस्थ रहने में हमारी आंतों का बहुत बड़ा योगदान होता है। हमारे शरीर की हर एक कोशिका के मुकाबले हमारी आंतों में 1.013 संख्या में अधिक बैक्टीरिया होते हैं यानि जितनी कोशिकाएं हमारे शरीर में होती हैं उनसे कुछ ज्यादा बैक्टीरिया हमारी आंतों में होते हैं। इसे गट माइक्रोबायोम कहा जाता है। अधिकतर बैक्टीरिया हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखने का कार्य करते हैं इन बैक्टीरिया को कॉमॅसल कहा जाता है। कोई 5 प्रतिशत बैक्टीरिया शरीर के

लिए घातक होते हैं जिन्हें पैथोजन कहा जाता है। ये बैक्टीरिया ही सबसे महत्वपूर्ण कड़ी हैं जिसको वजह से यह तै होता है कि शरीर रोगग्रस्त होगा या निरोग रहेगा। खासकर दीर्घकालीन रोगों को लेकर आंतों के माइक्रोबायोम का बड़ा महत्व है।

एसे में एक पुरानी कहावत 'जैसा खाओगे अन्न, वैसा रहेगा तन' बड़ी सटीक लगती है क्योंकि गट माइक्रोबायोम आपके भोजन की गुणवत्ता और मिश्रण पर निर्भर करता है। आजकल हार्ट अटैक और वह भी युवा लोगों में बहुत सुनने में आता है। लोग सवाल उठाते रहते हैं कि ऐसा क्यों हो रहा है और ऐसा क्या किया जाए कि भोजन के द्वारा इन खतरनाक बीमारियों को रोका जा सके। इसके चलते अमेरिका की टेक्सस टेक यूनिवर्सिटी ने आंतों के माइक्रोबायोम और उसके बाद हृदय में होने वाले परिवर्तनों पर अखरोट के प्रभाव का एक अध्ययन किया है जो काफी दिलचस्प लगता है।

हृदय रोग मृत्यु के सबसे बड़े

कारणों में से एक होते हैं। अमेरिका में हर वर्ष 7 लाख लोग यकायक मर जाते हैं। भारत में यह संख्या काफी बड़ी है पर यह कष्ट की बात है कि यहां प्रामाणिक और विश्वास योग्य आंकड़ों का पूरा अभाव है। हृदय रोग के प्रमुख जनक जीवनशैली एवम् भोजन में कुछ कमी या अधिकता है। हृदय संबंधी भोजन कम वसा, कम चीनी एवम् कम नमक को प्राथमिकता देता है। मांसाहार भोजन में पतला मांस जैसे चिकन और मछली आदि की सलाह दी जाती है। संवर्धित भोजन (प्रोसेस्ड फूड) को ट्रांसफैट की मात्रा के अनुसार अनुपयुक्त पाया गया है। इस तरह से फल, हरी सब्जियां, मोटा अनाज, सूखे मेवे, मछली और चिकन आदि हृदय को स्वस्थ रखने में सहायक होते हैं।

इन सब खाद्य पदार्थों में से अखरोट पर काफी अध्ययन हुआ है जिसमें इसे हृदय के स्वास्थ्य का रक्षक पाया गया है। अखरोट यह कार्य आंतों के माइक्रोबायोम को स्थिर करके करता है। दही, योगर्ट, याकल्ट, काफ़ी, कोमबुचा

चाय आदि द्वारा हमारे शरीर को प्रोबायोटिक मिलते रहते हैं जो हमारी आंतों के स्वास्थ्य में सहायक होते हैं। अखरोट में ओमेगा 3 अल्फा लिनोलेनिक एसिड (आला) नामक पदार्थ होता है जो प्रज्वलन (इंफ्लेमेशन) को कम करके आंतों के माइक्रोबायोम को स्थिर रखता है। इसके अलावा अखरोट के सेवन से रक्त में होमोऑर्जिनाइन नामक पदार्थ के स्तर बढ़ जाते हैं, होमोसिस्टाइन कम हो जाता है। इसके फलस्वरूप हृदय का स्वास्थ्य बेहतर होने लगता है।

मैमोरेने मेंडिकल स्कूल ऑफ़ पी टी हेल्थ, हस्टन के डॉक्टर जॉन हॉगिंस के अनुसार आला कोलेस्ट्रॉल संतुलन को सही रखता है, मेटाबोलिक सिंड्रोम (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, उच्च यूरिक अम्ल) के खतरों को कम करता है जिसके कारण हृदय रोग में कमी आती है। अमेरिका की जानियातो कॉलेज की मानसी चंद्रा का कहना है कि अखरोट आंत के माइक्रोबायोम जिस तरह के सकारात्मक रूप में प्रभावित करता है

उस पर व्यापक अध्ययन होना चाहिए क्योंकि तब हमें हमारे शरीर पर होने वाले फायदों के साथ यह भी पता चल पाएगा कि ये फायदे किस प्रक्रिया के द्वारा हो रहे हैं। ऐसा होने पर हम अपने हृदय को बेहतर देखभाल कर पाएंगे।

आज की स्थिति में हमारे भोजन में 50 प्रतिशत कार्बोहाइड्रेट्स, 16 प्रतिशत प्रोटीन और 34 प्रतिशत फैट होनी चाहिए। इस भोजन में विभिन्न भोजन शैलियों को देखते हुए एगोना 60 - 90 ग्राम अखरोट होने चाहिए। अब यहाँ एक बड़ा सवाल सामने आता है कि कितने लोग अखरोट खाते हैं? क्षमता रखते हैं, मांग बढ़ने पर इसकी कीमत किन ऊंचाइयों को छूने लगेगी और बाजार में मिलने वाले अखरोट की गुणवत्ता क्या है? इन सवालों के जवाब मिलें, तब तक जो लोग अखरोट क्रय करने में सक्षम हैं वे अपने माइक्रोबायोम और हृदय को बेहतर स्वास्थ्य प्रदान करने के लिए इसका उपयोग प्रारंभ कर सकते हैं।

-डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

राजपूताना इंटरनेशनल पोलो टीम ने मोरक्को में जीत हासिल की

जोधपुर, (कासं)। राजपूताना इंटरनेशनल पोलो टीम ने मोरक्को में 'महाराजा दी जोधपुर चैंपियनशिप-2023' में जीत हासिल की। जोधपुर पोलो एवं इक्वेस्ट्रियन इंस्टीट्यूट के सचिव जंगजीत सिंह ने बताया कि पूर्व महाराजा गज सिंह की मौजूदगी व

का इंटरनेशनल मंच पर चैंपियन जितना अपने आप में एक बड़ी जीत है। टीम प्रबंधक अंकुर मिश्रा, जो एक पोली खिलाड़ी और जोधपुर पोली और जयपुर पोली मैगजीनों के मुख्य संपादक भी हैं, ने टीम की महत्वपूर्ण सफलता के पीछे उनकी प्रशिक्षण और

- टीम कप्तान सवाई पंचनाम सिंह जयपुर ने कहा कि यह टीम के संगठन व मेहनत का परिणाम है
- राजपूताना इंटरनेशनल पोलो टीम ने 'महाराजा दी जोधपुर चैंपियनशिप-2023' में जीत हासिल की

संरक्षण व मॉन पैट्रिक गुएर्राड हर्मेस की देखरेख में टीम ने मोरक्को में पूरे टूर्नामेंट में शानदार खेल का प्रदर्शन रचा है। टीम कप्तान सवाई पंचनाम सिंह जयपुर ने कहा कि यह टीम के संगठन व मेहनत का परिणाम है। भारत

रणनीति की प्रशंसा करते हुए कहा कि "टूर्नोई महाराजा दी जोधपुर चैंपियनशिप 2023" ने वैश्विक पोली में एक अमिट निशानी छोड़ी है, और आने वाले लम्बे में और भी एक शानदार प्रदर्शनों की उम्मीद है। टीम के सभी खिलाड़ियों ने एक शानदार प्रदर्शन किया। अंगद कलान, पंचनाम सिंह, और राघव राज ने बहुत मजबूती और मेल-मिलान से टीम रणनीति को सफलतापूर्वक निभाया और भारत का झंडा, एक बार और इंटरनेशनल गेम्स में परचम दिखाया।



राजपूताना इंटरनेशनल पोलो टीम ने मोरक्को में जीत हासिल कर परचम लहराया।

जानकारी अनुसार चैंपियनशिप 27 अगस्त को शुरू हुई जिसमें भारत, मोरक्को, अमेरिका और चेक गणराज्य की टीमों भाग ले रही है। पहले दिन 29 अगस्त के मैच में अमेरिका ने मोरक्को

को हराया, दूसरे मैच में राजपूताना टीम ने चेक गणराज्य को 5-3 से हराया। इसमें अंगद, एच एच जयपुर व राघव राज का खास योगदान रहा। दूसरे दिन 30 अगस्त को राजपूताना टीम ने

मोरक्को से मैच खेला जिसमें मोरक्को ने एक गोल से जीत हासिल की। तीसरे दिन 31 अगस्त को फाइनल मैच में राजपूताना टीम ने अमेरिका से खेला और अपनी कुशलता से जीता।

बरामदा व प्याऊ को भूमाफिया ने ट्रेक्टर व जेसीबी से ध्वस्त किया

पावटा, (निर्सं)। उपखण्ड क्षेत्र के ग्राम मांजूकोट में ब्राह्मण समाज के पूर्वजों द्वारा करीब 100 वर्ष पूर्व उडेश्वर महाराज की बगीची के आम रास्ते में बनाये गये पट्टाशुद्ध बरामदे व प्याऊ को भूमाफियाओं द्वारा ट्रेक्टर व जेसीबी से खुद-बुर्द

- ब्राह्मण समाज के पूर्वजों द्वारा बनाया गया था बरामदा व प्याऊ
- लोगों ने भूमाफिया की गिरफ्तारी की मांग की



पावटा के ग्राम मांजूकोट में भूमाफियाओं द्वारा ध्वस्त किया गया बरामदा व प्याऊ।

कर तोड़ दिया गया। जानकारी के अनुसार भूमाफिया यालीमर यादव पुत्र बनवारी लाल यादव, प्रकाश यादव पुत्र हनुमान यादव निवासी कांकरणा के खेत बरामदे व प्याऊ के पीछे हैं। सुबह जब ग्रामीणों ने बरामदे व प्याऊ को टूट हुआ देखा तो ग्रामीणों में आक्रोश

व्यापत हो गया व ग्रामीणों द्वारा एक बैठक का आयोजन किया गया जिसमें सर्व समाज के लोगों ने इसका विरोध किया। वहीं बैठक में समाज के प्रतिष्ठित लोगों योगेश शर्मा पुत्र रामजीलाल शर्मा, सुभाष शर्मा पुत्र बालाराम शर्मा द्वारा भू-माफियाओं से दूरभाष के जरिये वार्ता की तो उन्होंने गाली गलौच

करते हुए उन्हें जान से मारने की धमकी दी। जिसको लेकर सर्व समाज के लोगों द्वारा भूमाफियाओं के खिलाफ मामला दर्ज करवा अपमान के खिलाफ आक्रोशित ग्रामीणों ने प्रागपुरा थाने में जाकर भू-माफियाओं की गिरफ्तारी की मांग की। भूमाफियाओं पर कार्यवाही नहीं होने पर धरना प्रदर्शन

व उग्र आंदोलन की चेतावनी दी। इस दौरान जुगल किशोर यादव, अजय यादव, मंजीत यादव, सुंदरलाल यादव, राम कृष्ण वर्मा, शिवराम वर्मा, रामेश्वर वर्मा, मूलचंद वर्मा, पंडितराज सरयच मनोज वर्मा, सुभाष वर्मा, नेतराम, कृष्ण शर्मा, दिनेश जांगिड, मुकेश सैन सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

राशिकल रविवार 3 सितम्बर, 2023

भाद्रपद मास, कृष्ण पक्ष, चतुर्थी तिथि, रविवार, विक्रम संवत् 2080, रेवती नक्षत्र दिन 10:38 तक, वृद्धि योग रात्रि 3:11 तक, बव करण प्रातः 7:37 तक, चन्द्रमा आज दिन 10:38 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरु-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज सर्वाथ सिद्धि योग दिन 10:38 से सूर्योदय तक है। आज संकष्ट चतुर्थी व्रत है। चन्द्रोदय जयपुर में रात्रि 9:07 पर होगा। आज बहला चौथ है। श्रवण तपस्या पूर्ण होगी। पंचक दिन 10:48 तक है। आज राक्ष पंचमी (उडडी) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:46 से 9:19 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:26 तक, शुभ 2:00 से 3:34 तक।

राहुकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:10, सूर्यास्त 6:42

	मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। अपने महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य योजनानुसार बनने लगेगे।		व्यक्तिगत कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आज शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं।		परिजनों का व्यवहार अच्छा नहीं रहेगा। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखना ठीक रहेगा। वाद-विवाद से बचने का प्रयास करें।
	घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। पारिवारिक कार्यों व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।		अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विनम्य हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।		घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी वाद-विवाद बढ़ सकते हैं। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।
	आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेगे। महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति होगी।		परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्मन हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता हो सकती है।		परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।
	अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।		विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेगे। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा।		अपने आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेगी। संभावित खोत से धन प्राप्त होगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा।